डॉ. अनिरुद्ध
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज, आरा

06.09.20

विधवा (निराला)

प्रश्न: 'विधवा' कविता के आधार भारतीय समाज में विधवा के जीवन पर प्रकाश डालिए।

या

निराला द्वारा रचित 'विधवा' कविता का भाव स्पष्ट करें।

उत्तर: प्रस्तुत कविता महाकवि निराला की अनुपम देन है। इस कविता के माध्यम से निराला ने भारतीय समाज में एक विधवा के जीवन पर प्रकाश डाला है। इसके अंतर्गत उन्होंने भारत की दीन-हीन विधवा की दयनीय और मर्मस्पर्शी चित्र खींचा है।

कवि का कहना है कि भारत की विधवा का जीवन अपनी पावनता में कितना दिव्य और भव्य है। वह पति-विहीन होकर भी अपने पति का विस्मरण नहीं कर पाती। वह अहर्निश अपने मानस मंदिर में अपने पति की भावपूर्ण प्रतिमा को अधिष्ठित कर पूजा-अर्चना किया करती है। भारत की विधवा मंदिर की पूजा-सामग्री की भाँति अपने पति के वियोग में पड़ी रहती है। वह दीपशिखा की भाँति सदैव जलती रहती है। ऊपर से वह शांत रहती है, निर्दय काल की स्मृतियों में निमग्न रहती है। वह उस पत्र की भाँति है जो वृक्ष से टूटकर निराश्रित बन जाता है। वह सदैव पैरों तले रौंदी, कुचली हुयी जिन्दगी जीती है।

भारत के दीन-हीन विधवा की व्यथा का कोई अंत नहीं है। नारी सुलभ जितने भी साज, श्रृंगार है वे सारे प्रसाधन उससे दूर हो जाते हैं। उसके लिए वह दिन सपना बन जाता है जिसमें छः ऋतुओं के अनुकूल वह अपनी साज-श्रृंगार करती थी। कभी उसके जीवन में भी सुख-साधन थे और वह भी अपने जीवन के सुख उपवन में स्वच्छंद विचरण करती थी। लेकिन आज, उसके सारे सपने बिखर गए हैं। कठोर नियति के प्रहारों से उसका जीवन दुखी व संतप्त है। उसने अपने जीवन के दर्पण में अपने प्रियतम रूपी घनश्याम

P.T.O

को एकबार देखा था, जो उसके निस्सहाय जीवन का एकमात्र सहारा था। आज उसका अदिठ सौभाग्य सूर्य सदा-सदा के लिए अज्ञात लोक में चला गया है और उसके अभाव में भारत की विधवा की करुणा सिक्त आँखें वेदना के सागर में आप्लावित प्रतीत होता है। मानो उसके मनरूपी भ्रमर के पंख करुणा रूपी रस में सरा-बोर हो गए हैं। भावावेश के दुखस्वर ही भ्रमर गुंजार हैं। किन्तु निर्मम संसार के दुष्ट जन उसकी वेदना जनित हाहाकार को संगीत की झंकार ही समझते हैं। भारत की विधवा का आँचल निरंतर बहते हुए आँसुओं से भीग गया है। दुख से उसके होंठ सूख गए हैं और दृष्टि में एक अज्ञात भय समाया जा रहा है।

भारत की विधवा शांत भाव से रोती-तड़पती है। धैर्यवान आकाश स्थिर पवन के अतिरिक्त उसकी व्यथा को संसार के अन्य दूसरे कौन लोग सुनने वाले हैं। कवि व्याकुल होकर पूछता है —

यह वह दुख जिसका न कोई ओर-छोर है
दैव अत्याचार कैसा घोर कठोर है।

कवि विधवा की दैन्य-दुख पर क्षुब्ध होकर सारे मानव समाज को ललकारते हुए कहता है, क्या इसी प्रकार कष्टप्रद जीवन जीने के लिए वह बनी है। आज उसमें इतनी शक्ति और क्षमता नहीं है जो उसके आँसुओं को पोंछ सके। क्या भारत की विधवा का दुख ऐसा ही बना रहेगा? कैसी विचित्र यह दुनिया है कि विधवा के आँसू ओस की बूँदों की तरह झर जाते हैं, लेकिन उसे कोई देखने वाला नहीं है।

इस प्रकार, निराला जी ने अपनी कविता में एक विधवा का जीवन्त चित्र खींचा है। विधवा के कारुणिक जीवन के साथ उसकी शालीनता, उसके आंतरिक-भावों तथा आदर्शों की बड़ी सशक्त अभिव्यक्ति इस कविता में देखने को मिलती है। यह कविता भावों को व्यक्त करने में सफल है।

U.G.B.A. Part I
Hindi (Hons)
"Bharat Ki Vidhwa"
ka sar